वार्तालाप नं. 473, हैदराबाद-3, आंध्र प्रदेश दिनांक 27.12.07
Disc.CD No.473, Dt. 27.12.07, Hyderabad-3 (Andhra Pradesh)

समयः 02.53-06.28

जिज्ञासुः बाबा, एक बाप की श्रीमत चाहिए ना? तो हिन्दी भाषा न आने के कारण जो ट्रांस्लेशन करते हैं ना कभी-2 उनके ऊपर भी विश्वास नहीं होता है। तो दूसरे से तीसरे से पूछते रहना? तो मेन तो हिन्दी आनी चाहिए न पहले?

बाबा: बिल्कुल आनी चाहिए। बाप का बच्चा, माँ-बाप का बच्चा बने और बच्चा बड़ा हो जाए और गूँ-6 करता रहे तो बड़ा बच्चा कहा जायेगा या छोटा बच्चा है? छोटा बच्चा है। होशियार तो है नहीं। विदेशी लोग आते हैं, बेसिक में भी 2-4 साल से चले हुए है और यहाँ से भट्ठी करके जाते हैं और एक साल के अन्दर भाषण देना शुरू हिन्दी में। ट्रांस्लेशन करना शुरु और लिट्रेचर अपनी भाषा में लिखना शुरु कर देते हैं। अपनी भाषा में- पॉलिश भाषा में। इंटरनेट में लिट्रेचर डालना शुरु कर देते हैं। बाप को हिन्दी में लेटर लिखते हैं और हिन्दी में लेटर मंगाते हैं। ये भाषा के लिए दोष कहें या आत्मा के कर्मों के लिए दोष कहे? हाँ?

Time: 02.53-06.28

Student: Baba, *Shrimat* should be obtained only from one Father, isn't it? So, because of the lack of knowledge of Hindi, sometimes people do not believe in the translation done by the translators. So, should we keep seeking a second or third opinion? So, the main thing is that we should know Hindi, shouldn't we?

Baba: You should certainly know. If someone becomes the father's child, parents' child and if the child grows up and still keeps mumbling *'gun, gun'* (i.e. does not know how to speak), will he be called a grown up child or a small child? He is a small child. He is not intelligent. Foreigners come (to the advance party); they have also followed the basic (knowledge) for 2-4 years and after they undergo the *bhatti* here, they start delivering lectures in Hindi within a year. They start translating (Baba’s class) and start writing literature in their own language, in their language, i.e. Polish language. They start uploading literature in internet. They write letter to the Father in Hindi and they request for replies to be given in Hindi. Should it be called a shortcoming of the language or the shortcoming of a soul’s karmic accounts? Hm?

वो विदेशी लोग, इतनी दूर की भाषा, और ये तो भारत की भाषा है, जहाँ की राजधानी हैदराबाद आधा हिन्दी और आधा उर्दू और आधा तेलुगु। (किसी ने कुछ कहा) हाँ, तीनों भाषायें अच्छे खासे जानकार है, वो क्या हिन्दी नहीं सीख सकते हैं? जब विदेशी लोग एक साल में हिन्दी सीख सकते हैं तो यहाँ के जो ए.पी (A.P) के लोग है, तेलुगु भाषा वासी है वो हिन्दी नहीं सीख सकते हैं? सीख सकते हैं। कोई कहे- नहीं सीख सकते हैं तो प्रूफ मौजूद है। एक बहन ऐसी है जो क, ख, ग नहीं जानती, ए, बी, सी, डी नहीं जानती थी हिन्दी की। सरेण्डर होने के बाद रो रही थी कि मैं बाबा से बात नहीं कर सकती हूँ। क्या? आँसू बह रहे थे और एक साल के अन्दर भाषण देना शुरु कर दिया। तो फिर? ये तो नहीं कहा जा सकता कि भाषा प्रॉब्लम की वजह से हम पीछे रह गए।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

For those foreigners, this language is so alien and this is a language of India, in the capital of this place, i.e. Hyderabad, the people speak half Hindi, half Urdu and half Telugu. (Someone said something) Yes, people know all the three languages very well; can't they learn Hindi? When foreigners can learn Hindi within a year, then can't the people of this place, A.P. (Andhra Pradesh State situated in South India), the Telugu speakers learn Hindi? They can learn. If someone says that he cannot learn it, then there is a proof available. A sister, who did not know *ka, kha, ga* (alphabets of Hindi language), A, B, C, D of Hindi, was crying after surrendering, that she cannot speak to Baba. What? Tears were flowing down her cheeks and within a year she started delivering lectures (in Hindi). So, then? It cannot be said: we lagged behind due to language problem.

समयः 14.45-18.57

जिज्ञासुः बाबा, एक वी.सी.डी में कहा है जिसका नम्बर डिक्लैर हो जाता है वो विरोधी बन जाता है। 8 देवों में तो ऐसा नहीं हुआ।

बाबा: जिनका नम्बर डिक्लैर होता है वो विरोधी बन जाते है?

जिज्ञासु: एक सी.डी में कहा है।

बाबा: नहीं। ये कहा है जो पहले जन्म लेते हैं.... क्या? जिनका जन्म पहले होता है वो असुर है। माना जो अपने को पहले प्रत्यक्ष करते हैं; जन्म लेना माना प्रत्यक्ष करना। जो अपने को पहले प्रत्यक्ष कर देते हैं वो स्वदेशी है या विदेशी है? विदेशी अपने को पहले प्रत्यक्ष करते हैं। कामी, क्रोधि, लोभी, मोही, अहंकारी ये विदेशी है या स्वदेशी है? विदेशी है। तो जो असुर होते हैं वो प्रत्यक्षता रूपी जन्म अपना पहले मनाते हैं और जो स्वदेशी है वो अपने को प्रत्यक्ष नहीं करते, पान्डवों की तरह गुप्त रहते हैं। जैसे बाप गुप्त, बाप के बच्चे भी गुप्त। इसलिए 8 देव भले उनके नम्बर कोई भी प्रत्यक्ष करे लेकिन वो अपने को भगवान मानने वाले या भगवान का बच्चा मानने वाले या 8 देव अपन को कहने वाले नहीं है। अगर कहते हैं तो वो बाप के अव्वल नम्बर बच्चे नहीं है।

Time: 14.45-18.57

Student: Baba, it was said in a VCD: the one whose number is declared becomes opponent. It has not happened in the case of the eight deities.

Baba: Do those whose numbers are declared become opponents?

Student: It has been said so in a CD.

Baba: No. It has been said that those who are born first....what? Those who are born first are demons. It means that those who reveal themselves first; to be born means to reveal oneself. Are those who reveal themselves first *swadeshis* or *videshis*[1]? *Videshis* reveal themselves first. Are the lustful ones, wrathful ones, greedy ones, those with attachment, the egotistic ones *videshis* or *swadeshis*? They are *videshis*. So, the demons celebrate their birth-like revelation first and the *swadeshis* do not reveal themselves; they remain hidden like the Pandavas. Just as the Father is hidden, the Father's children are also hidden. This is why although anyone may declare the numbers (i.e. ranks) of the eight deities, but they will not

[1] Swadeshi: belonging to one's own country
Videshi: the one who belongs to another country

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

consider themselves to be God or God's child or will not declare themselves to be among the eight deities. If they say, then they are not the number one children of the Father.

थोथा चना बाजे घना। अध जल गगरी छलकत जाए। आधा जल से भरी हुई गगरी ज्यादा छलकती है या पूरी भरी हुई गगरी ज्यादा छलकती है? (सभी: आधे जल वाली) तो जो गहरे होते हैं, भरे पूरे होते हैं वो अपने को अपने आप प्रत्यक्ष नहीं करते। ये भारत की परम्परा है...। क्या? कोई दुकान खोलेंगे तो बाप का नाम दुकान में डालेंगे या बच्चों का नाम दुकान में डालेंगे?....एण्ड सन्स कम्पनी। एण्ड के पहले बाप का नाम होगा। पहले बाप को प्रत्यक्ष करे तो 8 देव की लिस्ट में आए और जो अपने को प्रत्यक्ष कर दे.... क्या? मेगा प्रोग्राम बनाओ, बड़े-2 पोस्टर्स छपाओ, बड़े-2 पोस्टर में अपना चित्र, अपना फोटो डाल दो, त्रिमूर्ति शिव प्रत्यक्ष हो जाओ "भगवान की ये तीनों मूर्तियाँ है। जो स्थापना, पालना और विनाशकारी है।" तो पोस्टर्स छपा करके अपने को प्रत्यक्ष करने वाले वो देवता है या असुर है? हाँ? क्या है? वो तो असुर हो गए। पान्डव तो गुप्त होते हैं, गुप्त रह करके पुरुषार्थ करते हैं। उनका दान, मान, पद, सेवा सब गुप्त रहती है। ये स्वदेशी और विदेशी की खास पहचान है। ये आत्मा में स्वदेशी के गुण होने चाहिए। ऐसे नहीं कि शरीर विदेश में जन्म लिया है तो विदेशी है। गुणों, अवगुणों के आधार पर स्वदेशी विदेशी साबित होगा।

Empty vessels make more noise (*Thotha chana baajey ghanaa. Adhjal gagari chalkat jaaye.)* Does a half-filled pot splash more or a completely filled pot splash more? (Everyone said - the one partially filled with water) So, those who are deep, fulfilled, do not reveal themselves. This is the tradition of India....What? If they open a shop, will they display the name of their father on the shop or will they display the name of the children on the shop? ... & sons company. '&' will be prefixed by the name of the father. If they reveal the father first, they will come in the list of eight deities and the one who reveals himself.......what? 'Organize mega programmes, print big posters, insert your pictures, your photos in them; reveal yourself as Trimurty Shiv - these are the three personalities of Shiv, which cause establishment, sustenance and destruction'. So, do the ones who print posters and reveal themselves demons or deities? Hm? What are they? All of them are demons. Pandavas are hidden. They make *purusharth* (spiritual effort) while remaining hidden. Their donation, their respect, position, service, everything is hidden. This is the special sign of *swadeshi* and *videshi*. The soul should have these virtues of *swadeshis*. It is not that if the body was born in foreign countries, then it is foreigner. *Swadeshi, videshi* is proved on the basis of virtues and vices.

<u>समयः 19.00-23.20</u>

जिज्ञासुः बाबा, जब मुसलमान नमाज पढ़ने बैठते हैं तो अल्लाह-हू-अकबर बोलते हैं। अल्लाह हू माना शिवोहम हुआ। तो फिर अकबर माना क्या है?

बाबा: अक माने अक्कौआ। अक; अक का जो फूल होता है ना वो दुर्गन्ध छोड़ता है या सुगन्ध छोड़ता है? दुर्गन्ध छोड़ने वाला होता है। माना ग्लानि की दुर्गन्ध है या दिव्य गुणों की दुर्गन्ध कही जाती है? ग्लानि की दुर्गन्ध। तो जितने भी विदेशी है, खास करके मुसलमान और खास करके क्रिश्चियन्स उन्होने हिन्दुओं की और हिन्दु शास्त्रों की ज्यादा ग्लानि की या

बौद्धियों ने की है? सिक्ख धर्म वालों ने की है? मुसलमान और क्रिश्चियन्स ने ज्यादा ग्लानि की है। इसलिए वो अक के फूल है और उन अक के फूलों में वर, वर माने श्रेष्ठ। क्या? उन अक के फूलों में, दुर्गन्ध फैलाने वालों में, ग्लानि करने वालों में जो श्रेष्ठ है, ऊँचे ते ऊँचे हैं वो है अकबर। क्या? तो मुसलमान धर्म की जो प्रजावर्ग वाले हैं, फॉलोवर्स है वो अल्लाह के साथ किसका नाम जोडेंगे? अकबर का नाम जोडेंगे।

Time: 19.00-23.20

Student: Baba, when Muslims sit down to offer Namaz, they say - *Allah-hu-Akbar. Allah-hu* (I am Allah) means 'I am Shiv'. So, then what is meant by Akbar?

Baba: *Ak* means *Akkaua (calotropis). Ak*; does the flower of Ak emanate bad odour (*durgandh*) or fragrance (*sugandh*)? It emanates bad odour. Is it a bad odour of defamation or is it said to be a bad odour of divine virtues? A bad odour of defamation. Have the foreigners, especially the Muslims and especially Christians defamed the Hindus and Hindu scriptures more or have the Buddhists defamed them more? Have the Sikhs defamed them more? The Muslims and the Christians have defamed them more. This is why they are flowers of Ak and *var*, i.e. righteous among them. What? Among those flowers of Ak, among those who spread the bad odour, among those who cause defamation, the one who is righteous, the one who is the highest on high is Akbar. What? So, the subject category, the followers among the Muslim religion will suffix whose name with Allah? They will suffix the name of Akbar.

जिज्ञासु: बौद्ध धर्म वालों ने इतना ग्लानि तो नहीं किया फिर भी उसको भारत से क्यों निकाला?

बाबा: कोई ग्लानि न करे लेकिन भगवान को न माने, भगवान की रचना को भी न माने; विदेशी है भगवान को मानता है। अल्लाह-2 मुँह से तो करता है। ओ गॉड फादर! ऊपर करके मुँह तो करता है? मानता तो है, जन्नत को, पैरडाईज को मानता तो है, अल्लाह की रचना तो मानता है? ये तो नहीं कहता कि क्राईस्ट ने पैरडाईज स्थापन किया। ये तो नहीं कहता कि मोहम्मद ने जन्नत बनाई। कहता है? गॉड फादर को ही मानता है ना? तो बौद्ध ज्यादा श्रेष्ठ हुए, बौद्धी ज्यादा श्रेष्ठ हुए या भगवान को और भगवान की रचना को मानने वाले ज्यादा श्रेष्ठ हुए? नास्तिक कौन हुए और आस्तिक कौन हुए?

जिज्ञासु: जो मानने वाले हैं....

Student: The Buddhists have not defamed so much; even so why were they banished from India?

Baba: If someone does not defame, and does not accept God, does not accept God's creation either; suppose there is a foreigner; he believes in God. He at least utters the name of Allah; ‘O God Father’ through the mouth. He looks up, doesn't he? He at least believes in heaven, paradise; he has belief in the creation of Allah. He does not say that Christ established paradise. He does not say that Mohammad created *Jannat* (heaven). Does he say? He accepts only God the Father, does he not? So, is Buddha more righteous, are Buddhists more righteous, or those who accept God and God’s creation more righteous? Who are atheists and who are theists?

Student: Those who accept…..

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा: वो आस्तिक हैं और जो नहीं मानने वाले हैं वो नास्तिक है। इसलिए नास्तिक धर्म कौनसे धर्म से शुरु हुआ? बौद्ध धर्म ही है जहाँ से नास्तिकता की शुरुआत होती है। क्या? एक बौद्ध धर्म ही ऐसा है जिसमें भगवान क्या होता है ये नहीं बताया गया, स्वर्ग क्या होता है ये नहीं बताया गया, आत्मा क्या होती है वो नहीं बताया गया। न आत्मा को मानते, न परमात्मा बाप को मानते, न उसकी रचना स्वर्ग को मानते तो वो नास्तिक हैं या आस्तिक हैं? नास्तिक ठहरे। नास्तिकों से दूर रहना चाहिए या परिवार को खराब कर देंगे?

जिज्ञासु: दूर रखना चाहिए।

बाबा: नास्तिकों को दूर ही रखना चाहिए? तो देश निकाला कर दिया। क्या बुरा कर दिया क्या?

जिज्ञासु: फिर भी उन लोगों ने हिंसा तो नहीं किया ना?

बाबा: हिंसा का असली अर्थ मालूम है?

Baba: They are theists and those who do not accept (God) are atheists. This is why which religion started atheism? It was Buddhism itself through which atheism started. What? It is only Buddhism in which it was not mentioned what is God, what is heaven, what is soul. They neither accept the soul nor the Supreme Soul Father. They do not accept His creation, i.e. heaven; so are they atheists or theists? They are atheists. Should we maintain a distance from the atheists or will they spoil the family?

Student: We should maintain a distance (from atheists).

Baba: Should the atheists be kept at a distance? So, if they (i.e. the Buddhists) were banished, was it a wrong step?

Student: Even so they did not indulge in violence, did they?

Baba: Do they know the real meaning of violence?

<u>**समयः 23.25-25.35**</u>

जिज्ञासुः बाबा, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर, नाम तो अच्छा लग रहा है वो कौन थे (है?)

बाबा: आदमी थे और कौन थे? अच्छे श्रेष्ठ आदमी थे।

जिज्ञासु: नाम अच्छा है ना?

बाबा: नाम भी अच्छा है उन्होने काम भी अच्छा ही किया। जो अच्छा काम करते हैं उनकी महिमा होती है। काम तो अच्छा ही किया। पहले ईश्वर फिर बादमें चन्द्र। क्या? और दोनो मिल करके हो गए विद्या के सागर। क्या? शिव शंकर भोलेनाथ ईश्वर हो गए, चन्द्रमाँ हो गया चन्द्र और दोनो मिल गए तो विद्या सागर हो गए। आत्मा अभिमानी थे या देह अभिमानी थे? (किसीने कहा- आत्मा अभिमानी) कैसे? कैसे कहेंगे कि वो आत्मा अभिमानी थे? (किसीने कुछ कहा) यहाँ की बात छोड़ो, यहाँ - वहाँ की बात छोड़ो। जो यहाँ है सो वहाँ है, जो वहाँ है सो यहाँ है, जो हद में हैं सो बेहद में हैं, जो बेहद में हैं सो हद में हैं। (किसीने कहा- देह अभिमानी थे) देह अभिमानी थे? नहीं। उनकी जो कहानी है उसमें एक बात प्रसिद्ध है। उन्होने कौनसा काम करने में अपनी हेटी नहीं समझी? हाँ? उन्होने कुली का काम किया या नहीं किया? हाँ? ये देहभान की निशानी है या आत्मा अभिमान की निशानी है? (सभी-

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

आत्मा अभिमान) फिर? चाहे छोटा काम हो और चाहे बड़ा काम हो जन सेवा के हिसाब से कोई भी प्रकार की सेवा छोटी बड़ी नहीं होती है। ये आत्मा अभिमानी की निशानी है।

Time: 23.25-25.35

Student: Baba, the name Ishwar Chandra Vidya Sagar appears to be nice; who was he?

Baba: He was a man; what else was he? He was a righteous man.

Student: The name is nice, isn't it?

Baba: The name is nice as well as the work that he did was nice. Those who do good work are praised. He certainly did good work. First *Ishwar* (God), then *Chandra* (Moon). And together they became ocean of knowledge (*vidya ke saagar*). What? They became Shiv-Shankar Bholenath Ishwar; the Moon is Chandra and together they happen to be the ocean of knowledge. Was he soul conscious or body conscious? (Someone said – soul conscious) How? How can we say that he was soul conscious? (Someone said something) Leave the topic of this place; leave the topic of that place and this place. Whatever is here is there; whatever is there is here; whatever is in a limited sense is in an unlimited sense; whatever is in an unlimited sense is in a limited sense. (Someone said- he was body conscious) Was he body conscious? No. There is one thing famous about his story. Which task did he not think to be lowly? Hm? Did he work as a *Kuli* (porter) or not? Hm? Is it an indication of body consciousness or soul consciousness? (Everyone said – Soul consciousness) Then? Whether it is a small task or a big task; from the point of public service any kind of service is not small or big. It is an indication of soul consciousness.

<u>समयः 34.40-47.25</u>

जिज्ञासुः बाबा जाम्बवंती नाम क्यों पड़ा?

बाबा: 8 पटरानियाँ गाई हुई है। क्या? 8 पटरानियाँ गाई हुई है। उन पटरानियों में एक का नाम जाम्बवंती है। क्या नाम है? जाम्बवंती । रामायण में किसीका नाम इस शब्द से मिलता-जुलता है? (जिज्ञासु: जाम्बवंत के नाम से) रामायण में दिखाते हैं कि राम की सेना जब तैयार हुई तो बन्दरों की सेना के साथ-2 रीछ भी उसमें इकट्ठे हो गए। क्या? हो गए कि नहीं इकट्ठे? उन रीछों का मुखिया का नाम था जाम्बवंत और जाम्बवंती की लडकी होगी उसका नाम क्या पडेगा? जाम्बवंती। जैसे महाभारत में नाम पड गया जाम्बवंती या तो लडकी होगी या तो बहन होगी छोटी। ऐसे ही महाभारत में नाम पड गया कृपा और कृपी। भाई बहन हो गए तो कृपा, कृपी नाम पड गया। ऐसे ही जाम्बवंती की कन्या या छोटी बहन उसका नाम क्या पड गया? जाम्बवंती। ये रीछों का परिवार है। किसका परिवार है? रीछ। बेर (bear). रीछ की क्या विशेषता होती है?

जिज्ञासु: बहुत बाल होते हैं।

Time: 34.40-47.25

Student: Baba, how was the name Jamvanti coined?

Baba: 8 queens are famous. What? 8 queens are famous. The name of one of those queens is Jambvanti. What is the name? Jambvanti. Does any name from (the epic) Ramayana match with this word? (Student: By the name of Jambvant) It is shown in Ramayana that when the army of Ram was being organized, then along with the army of monkeys, the bears also joined them. What? Did they join them or not? The name of the chief of those bears was Jambvant and if he has a daughter, what would be her name? Jambvanti. For example, when

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

the name Jambvanti was coined in Mahabharata, then she will be either a daughter or a younger sister (of Jambvant). Similarly, there were names like Kripa and Kripi in Mahabharata. They were brother and sister; so they were named Kripa and Kripi. Similarly, what was the daughter or younger sister of Jambvant named? Jambvanti. This is a family of bears. Whose family? *Reech. Bear*. What is the specialty of a bear?

बाबा: हाँ। और धर्म वालों के इतने बाल नहीं होते हैं शरीर में और जो रीछ सम्प्रदाय है उनके शरीर में ढ़ेर बाल होते हैं। बताओ वो कौनसा धर्म है? (किसीने कहा- आर्यसमाज) नहीं। कोई के बुद्धि में नहीं आ रहा है? (सभी: सिक्ख धर्म) सिक्ख। कोई भी सिक्ख को स्नान करते हुए देखो और धर्म वालों के मुकाबले उसमें, उनके शरीर में ज्यादा बाल होते हैं या नहीं होते हैं? बहुत बाल होते हैं और बाल जो है; ज्यादा बाल होना ये विकारी होने की निशानी है या निर्विकारी होने की निशानी है? (सभी: विकारी होने की निशानी है) ज्यादा विकारी होने की निशानी है। इस बात को उन लोगों को सीधा-2 सुनायेंगे तो हो सकता है बिगड जाए। हाँ? तरीके से सुनाना चाहिए कि - देखो हिन्दुस्तान में जो स्वतंत्रता प्राप्त की गई और स्वतंत्रता के लिए जो विधर्मियों से लडाई लडी गई उसमें सबसे जास्ती बलिदान किसने दिये? सिक्ख धर्म वालों ने बलिदान दिये। हिन्दुओं ने इतने बलिदान क्यों नहीं दे पाए? क्या कमी थी? (किसीने कहा: प्युरिटी) नहीं। विष से विष मारा जाता है और लोहे से लोहा काटा जाता है। जितने भी भारत के ऊपर आक्रमण हुए विदेशियों के, चाहे मुसलमानों के हुए हो, चाहे क्रिश्चयंस के हुए हो। आक्रमणकारी पश्चिम की ओर से आए या उत्तर, दक्षिण, पूर्व से आए? पश्चिम से आए। तो जहाँ से भी आक्रमण हुए उन आक्रांताओं ने आकरके भारत पर आक्रमण किए और भारत में ही आ करके बस गए। क्योंकि भारत जैसी धरणी और कोई देश में नहीं होती।

Baba: Yes. People belonging to the other religions do not have so much hair on their bodies and the bear community has a lot of hair on their body. Say, which religion is it? (Someone said – Arya samaj) No. Does it not strike anybody's intellect? (Everyone said – Sikhism.) Sikh. If you see any Sikh taking bath, when compared to people belonging to other religions, do they have more hair on their body or not? They have a lot of hair and as regards hair, having more hair is an indication of being vicious or of being the one without vice? (Everyone said – It is an indication of being vicious) It is an indication of being more vicious. If you tell them directly, it is possible that they may get angry. Hm? You should tell them properly. Look, the freedom that was achieved in India; and in the war that was fought with the *vidharmis*[2] for freedom, who gave the maximum number of sacrifices? Those belonging to Sikhism gave more sacrifices. Why didn't Hindus sacrifice to that extent? What was the shortcoming? (Someone said – Purity) No. Poison is removed with poison and iron is cut with iron. In all the attacks that were undertaken by the foreigners on India, whether it was the attacks by the Muslims, whether it was attacks by the Christians; did the attackers come from the West or from the North, South or East? They came from the West. So, the direction from which the attacks took place, those attackers came and attacked India and they settled in India because the land of no other country is as fertile as India.

[2] Those whose beliefs and practices are opposite to that set by the Father.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

तो भारत में ही आक्रांता आए हिस्ट्री में और यहीं आ करके बसते रहे। तो उनके संग का रंग पश्चिम भारत वालों को, पंजाब वालों को, हैदराबाद वालों को पहले लगेगा या पूर्व भारत वालों को पहले लगेगा? पहले पश्चिम भारत वालों को पहले संग का रंग लगता है। तो विदेशियों में जो मुख्य है कामी इस्लामी और क्रोधी क्रिश्चियंस उनके काम विकार और क्रोध विकार का ज्यादा अंश, ज्यादा संग का रंग पश्चिम भारत वालों को पहले लगता है या पूर्व और दक्षिण भारत वालों को पहले लगता है? पश्चिम भारत वालों को पहले लगता है। चाहे वो सिन्धी हो, सिन्धी ब्राहमण हो और चाहे वो पंजाबी खून हो। पंजाब में विशेषकर कौनसा धर्म फैला? सिक्ख धर्म। तो जो भी सिक्ख हुए संग के रंग से जास्ती विकारी बन गए और उनमें इतनी विकृति आ गई, इतना विष भर गया, इतना लोहे का तत्व भर गया कि उन्होंने उन क्रिश्चियंस से और मुसलमानों से टक्कर ले ली। हिन्दुओं में वो ताकत नहीं थी। तो अच्छा हुआ या बुरा किया? सिक्खों ने अच्छा किया या बुरा किया? अच्छा किया।
So, the invaders came only to India according to history and continued to settle here. So, will the colour of their company be applied to those living in the Western India, those living in Punjab, those living in Hyderabad or to those living in Eastern India first? Those living in the Western India are coloured by their company first. So, the main among the foreigners, the lustful Islamic people, and the wrathful Christians, will the trace of their lust and anger, the company of their colour affect the residents of Western India more or the residents of Eastern and Southern India? The residents of Western India are coloured first. Whether they are Sindhis, whether they are Sindhi Brahmins or whether they have Punjabi blood. Which religion spread especially in Punjab? Sikhism. So, the Sikhs became more vicious through the color of their company and they became so deformed (with vices), they were full with poison to such an extent, they were full with the element of iron (i.e. impurity) to such an extent that they confronted the Christians and Muslims. Hindus did not have that power. So, was it good or bad? Did the Sikhs do a good thing or a bad thing? They did a good thing.

जो होता है ड्रामा में अच्छे के लिए होता है। इसलिए जामवंत का गायन है कि राम की सेना बन्दरों की तो थी फिर भी जामवंत अगर सहयोगी न बनते तो राम की विजय नहीं होती। तो निष्कर्ष ये निकला कि सिक्ख धर्म वालों में जो राज करेगा खालसा, वो खालिस आत्मा एडवांस पार्टी में सबसे पहले बाप की बनती है। क्या? सबसे पहले बाप को सरण्डर होती है इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला 82-83 में कि पंजाब की धरणी कन्या दान में सबसे आगे गई। अरे, 82-83 में ही सबसे आगे गई? उससे पहले क्या पंजाब से कन्यायें सरेण्डर नहीं हुई थी? हुई थी। चन्द्रमणी दादी सरेण्डर हुई कि नहीं? (किसीने कहा- हुई) और भी ढ़ेर सारी कन्यायें सरेण्डर हुई। लेकिन वो माँ के प्रति सरेण्डर हुई। बाप का स्वरूप नहीं हुआ। बच्चा और बच्ची बाप का कहा जाता है या माँ का? बाप का कहा जाता है। जिस बच्चा, बच्ची को अपने बाप का ही पता न हो तो अच्छा नहीं माना जाता। तो वो पहली बच्ची निकली जो पंजाब का खून होने के कारण पंजाबियों में श्रेष्ठ मानी गई और कन्यादान में सबसे आगे गई। तो जो सबसे आगे जायेगा; कन्याओं के पास तन के अलावा और तो कुछ होता ही नहीं

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

कि होता है? तन ही तन होता है और तन अर्पण करने में सबसे आगे गई। तो प्राप्ति बड़ी होनी चाहिए या छोटी होनी चाहिए? बड़ी प्राप्ति होनी चाहिए।

Whatever happens in the drama is for good. This is why it is famous about Jambvant that though Ram had an army of monkeys, if Jambvant had not extended help, Ram would not have gained victory. So, the conclusion is that [the proverb] *'raaj karega khaalsaa*[3]*'* in Sikhism, first of all that *khaalis* (pure) soul becomes the Father's child in the advance party. What? She surrenders to the Father first of all; this is why it has been said in the *Avyakta Vani* in (19)82-83 that the land of Punjab went ahead of everyone in *kanyadaan*. Arey, did Punjab go ahead of everyone only in (19)82-83? Did *kanyas*[4] not surrender from Punjab before that? They did. Did Chandramani Dadi surrender or not? (Someone said - She did) Many other virgins also surrendered. But they surrendered to the Mother. That was not a form of the Father. Is a son and a daughter said to belong to the father or to the mother? They are said to belong to the father. If a son or daughter does not know about his/her father at all, then it is not considered to be good. So, she was the first daughter who, being the blood of Punjab was considered to be the righteous one among the Punjabis and Punjab went ahead of everyone in *kanyadaan* (dedicating virgins in the yagya). So, the one who goes ahead of everyone…; the virgins do not have anything except their body or do they? They have only their body and she moved ahead in surrendering her body. So, should she have a greater achievement or a lesser achievement? She should have a greater achievement.

और दूसरी बात- दिल्ली के लिए खास बोला, दिल्ली की धरणी और धरणी वालों ने पहले-2 बीज डाला है। इसलिए जो पहले बीज बोते हैं वो ज्यादा प्राप्ति करते हैं या जो मध्य में और अंत में बोते हैं वो ज्यादा प्राप्ति करते हैं? जो पहले बीज बोता है वो ज्यादा प्राप्ति का हकदार बन जाता है। पहली फसल बोई हुई ज्यादा फल देती है। तो दिल्ली वालों को ये खास वरदान मिला हुआ है कि कितने भी विरोधी बने, आदि से अंत तक भी विरोधी बने लेकिन बाप को इस बात में उन्होने बान्ध लिया है कि अंत तक बाप का सहयोग लेने के अधिकारी है। क्या? अंत तक जब कभी भी सहयोगी बनना चाहे तो बन सकते हैं और बाप उनसे सहयोग लेगा। मना नहीं करेगा। तो कौनसी खासियत हुई जो इतनी बड़ी प्राप्ति, इतना बड़ा वरदान उनको मिल जाता है? पहले अर्पित हुए। इसलिए जो जाम्बवंती है वो जाम्बवंत रीछ से कनेक्टेड है। महाभारत में भी उसका नाम जाम्बवंती है। क्या? जाम्बवंती, सिक्ख धर्म से कनेक्टेड।

And the second thing, it has especially been said for Delhi; the land of Delhi and the residents of Delhi have first of all laid the seed. This is why do those who lay the seed first achieve more or do those who lay the seed in the middle and in the end achieve more? Those who sow the seed first become entitled to more achievements. The first crop produces more yields. So, the residents of Delhi have received this special boon that to whatever extent they may oppose, they may become opponents from the beginning to the end, but they have tied the Father with the fact that they are entitled to obtaining the Father's support till the end. What? Till the end, they can become helpful whenever they wish and the Father will accept their help. He will not decline. So, what is the specialty that they get such a big achievement, such

[3] The pure one will rule
[4] A virgin or an unmarried girl

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

a big boon? They surrendered first. This is why Jambvanti is connected with the bear Jambvant. Even in Mahabharata her name is Jambvanti. What? Jambvanti is connected to the Sikh religion.

जिज्ञासु: बाबा फिर सत्यभामा कौन है?
बाबा: भा माना हुई सत्य माना सच्ची और माँ माने अम्मा। क्या हुई? सत्यभामा। जो सच्चाई में माँ हुई, प्रैक्टिकल जीवन में। जो सच्चाई में माँ होगी वो बच्चे की ग्लानि करेगी या बच्चे की महिमा करेगी? (किसीने कहा- महिमा करेगी) महिमा करेगी। जो बाप प्रत्यक्ष होता है उस बाप की प्रत्यक्षता में जिसने बहुत महिमा करके दिखाई। इतनी महिमा की, इतनी सेवा की कि बाप ने उठा करके उसको प्यार के मारे अपने सर पर बैठा दिया। बहुत प्यारा बच्चा होता है ना, बहुत दुकान सम्भालता है ना; छोटा बच्चा बहुत भाग दौड़ करता है, दुकान से घर, घर से दुकान तो बाप को प्यार आयेगा ना? तो सर माथे पर चढ़ाय लेते हैं। कौनसी देवी है, कौनसी पटरानी है जो सर माथे पर चढ़ाई हुई है? हाँ? सत्यभामा।
Student: Baba, then who is Satyabhama?
Baba: *Bha* means 'became', *satya* means true and *ma* means mother. What did she become? *Satya bha ma* The one who became a mother in reality, in practical life. Will the one who is mother in a true sense defame the child or praise the child? (Someone said - She will praise) She will praise. The one who increased the glory of the Father when He is revealed; she glorified Him so much, she served him so much that the Father gave her a place on his head lovingly. If a child is very dear, if he takes care of (the father's) shop, if the young son runs a lot between the shop and house and vice versa, then the father will love him, will he not? So, He gives her a place on the head or forehead. Which *devi*, which queen has been given a place on the head or forehead? Hm? Satyabhama.

समयः 52.45-01.03.05
जिज्ञासुः बाबा, कहते हैं अच्छे-2 बच्चों का भी आँखों से दिनभर में 10, 20, 50 भूले होती है। तो आँखों से कैसे भूल होती है?- पहला प्रश्न। और उसे कैसे सुधारना है?
बाबा: क्या? अच्छे-2 बच्चों से 10, 20, 50 भूले होती है दृष्टि से, आँखों से । माना आँख व्यभिचारी बनती है। व्यभिचारी बनती है माना? एक को देखना नहीं चाहती। क्या चाहती है? अनेकों की तरफ दृष्टि जाती है और अनेकों को "देखते ही रहे-2", मन की आँखों से भी देखते रहे और तन की आँखे हैं वो भी ललचायमान रहती है- हाय-2 हमको ये ही ले जाता, इसीसे हो जाती, कहाँ फस गए आ करके। तो ये व्यभिचारी आँखे 10, 20, 25 बार होती है सिर्फ कन्याओं, माताओं की ही नहीं कुमारों और अधरकुमारों की भी यही हालत है| जिनको अच्छे-2 बच्चों की लिस्ट में डाला जाता है माना सर्विसेबल है।
Time: 52.45-01.03.05
Student: Baba says that even the nice children commit 10, 20, 50 mistakes throughout the dayए through the eyes. So, how are mistakes committed through the eyes? This is the first question. And then, how should we correct it?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: What? Nice children commit 10, 20, 50 mistakes through vision, through eyes, i.e. the eyes become adulterous. What is meant by the eyes becoming adulterous? It does not want to see one. What does it want? The eyes see many and they wish 'let us keep seeing, let us keep seeing [many]' . They [wish to] see through the eyes of the mind, and the eyes of the body also remain greedy thinking, 'this person should have taken me [with him]; I should have [married] this person; I have been entangled [myself] by coming here'. So, these eyes become adulterous 10, 20, 25 times. It is not just the virgins, the mothers; the condition of the *kumars* (unmarried men) and the *adharkumars* (men who have been married) is also the same, the ones who are put in the list of 'nice children', i.e. the ones who are serviceable.

तो समझ में तो आ गया होगा कि आँखे कैसे ललचायमान होती है, व्यभिचारी बनती है? आँखों से भूल होती है या नहीं होती है? अरे, न समझ में आया हो तो बता दो। प्रश्न है- कैसे भूल होती हैं आँखों से? आँखों से पाप कैसे बनता है? सबसे जास्ती अन्धा बनाने वाला अंग कौनसा है? सबसे जास्ती धोखा देने वाला अंग कौनसा है? आँखे हैं सबसे जास्ती धोखा देने वाली। पता ही नहीं चलता हम धोखा खा गए। ऐसा धोखा खा जाते हैं कि जिसको आँख से 1 सेकेण्ड, 10 सेकेण्ड भी देख लिया बस उधर ही बुद्धि जाती रहती है। बार-2 रोकना चाहे, बार-2 उधर जाती है। क्योंकि पूर्व जन्म का हिसाब किताब होगा तो 1, 2, 10 सेकेण्ड भी अगर देखेंगे..... ज्यादा जन्मों का हिसाब किताब होगा तो जल्दी भूलेगा नहीं। वो याद जरूर आता रहेगा। कितनी भी मेहनत करे, अनेक जन्मों का संग किया है तो वो 10 सेकेण्ड का जो संग हुआ वो जरूर याद आवेगा। अगर ऐसा न हो तो बाबा को मुरली में ये डायरेक्शन देने की जरूरत नहीं हैं कि जिससे लगाव लग जाए उसका तो मुँह भी नहीं देखना चाहिए। ये डायरेक्शन क्यों दिया बाबा ने?
जिज्ञासु: नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा बनने के लिए।
So, you must have understood how the eyes become greedy, adulterous? Do the eyes commit mistakes or not? Arey, if you haven't understood, then tell me. The question is: how do the eyes commit mistakes? How do the eyes commit sins? Which organ makes us blind to the maximum extent? Which organ deceives us the most? The eyes deceive us the most. We do not know at all that we have been deceived. We are deceived in such a way that even if we see someone for a second or ten seconds, the intellect keeps going there. We try to stop it again and again, it goes there repeatedly because if there is a karmic account of past births, then, even if we see [someone] for 1, 2, 10 seconds ... if the karmic account is of more number of births, then we will not forget [that one] soon. He will continue to come in our thoughts definitely. To whatever extent we work hard; if we have kept his company for many births, then that company of 10 seconds will certainly come to our mind. If it is not so, then there is no need for Baba to give directions in the Murlis that we should not even see the face of the one with whom we become attached. Why did Baba give this direction?
Student: To become *nashtomoha smritilabdha* (victory over attachment and the awareness of the Father and the self).

बाबा: नहीं। इसलिए दिया कि 10 सेकेण्ड जिसको देखा है ब्राह्मण जीवन में सिर्फ एक बार और वो लगातार याद आ रहा है अगर उसको दुबारा फिर देख लिया तो क्या हो जायेगा? वो

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

अटैचमेंट और पक्का हो जायेगा। क्योंकि श्रीमत की बरखिलाफी की। श्रीमत क्या है? क्या श्रीमत है? जिससे लगाव लग जाए, जिससे अटैचमेंट हो जाए उसका मुँह भी नहीं देखना चाहिए। मुँह देखेंगे तो आँखे जरूर देखने में आ जायेंगी और आँखे फिर धोखा दे देगी। तो पता चल गया कि आँखों से 10, 20, 50 बार भूले कैसे होती है?

Baba: No. This direction was given because the person whom we have seen once for 10 seconds in our Brahmin life and if that person comes to our mind continuously, and if we see him again, then what will happen? That attachment will become stronger because we have violated the *shrimat*. What is the *shrimat*? What is the *shrimat*? We should not even see the face of the one for whom we develop attachment. If we see the face, then the eyes will definitely be visible and the eyes will deceive us once again. So, did you come to know how the eyes commit mistakes 10, 20, 50 times?

जिज्ञासु: बाबा कहते हैं ना सर्वइन्द्रियां नैन प्रधान।

बाबा: अरे, प्रधान मंत्री कहाँ बैठता है? ऊपर राजा है, प्रधान मंत्री कहाँ बैठेगा? राजा के आस पास ही बैठेगा ना? तो आँखे हैं प्रधान मंत्री। अगर धोखा देने पे आ जाए तो ये जितना धोखा राजा को दे सकते हैं उतना और कोई व्यक्ति धोखेबाज नहीं बनेगा। तो एक प्रश्न का समाधान हो गया। क्या? आँखे धोखा कैसे देती है 10, 20, 50 बार? वो व्यक्ति 10, 20, 50 बार देखने को नहीं मिलता है। क्या? एक ही बार भले देखा हो लेकिन वो आँखे, चेहरा सामने आ जाता है। (किसीने कुछ कहा) हाँ-2 जो साकार आँखे हैं उनके सामने वो चेहरा सामने आ जाता है। बार-2 सामने आता है।

Student: Baba, it is said ‘eyes are the main organs among all the organs’, isn’t it?

Baba: Arey, where does the Prime Minister sit? The king is at the top; so, where will the Prime Minister sit? He will sit near the king only, will he not? So, the eyes are the Prime Minister. If the eyes start deceiving, then no other person can deceive the king more than this one (the eyes). So, you have received reply for one question. What? How do the eyes deceive 10, 20, 50 times? That person is not visible 10, 20, 50 times. What? Even if we have seen him once, those eyes, that face comes in front of them. (Someone said something) Yes, yes, that face comes in front of the corporeal eyes. It comes in front of them again and again.

जिज्ञासु: बाबा, उससे बचने के लिए बाबा ने कहा है ना देखते हुए न देखो।

बाबा: वो तो ठीक है देखते हुए न देखे। वो तो ठीक है लेकिन जो श्रीमत मिली हुई है.... क्या? जो बार-2 याद आए माने अटैचमेंट हो गया। लगाव की निशानी क्या है? लगाव की निशानी है- जिससे लगाव लग जावेगा वो बार-2 बुद्धि में, स्मृति में आवेगा। आँखों के सामने आ जावेगा। तो क्या करना है? (किसीने कहा- उसका मूँह भी नहीं देखना है।) हाँ जिससे लगाव लग जाए उसका मुँह भी नहीं देखना है। चलो, इन आँखों से हम मुँह नहीं देखेंगे लेकिन अन्दर की आँखों से मुँह मुँह और आँखे याद आती रहे तो क्या करे? क्या करे उसी समय? बाप की आँख देखे, बाप का चेहरा देखे तो काट हो जावेगा। क्योंकि बाप से बड़ी चुम्बक और कोई है नहीं। लेकिन कोई लोहा ऐसा होता है जिसको चुम्बक तुरंत पकड़ लेती है और कोई लोहा ऐसा होता है कि उसपे पॉलिश चढ़ा दी। चढ़ाई जाती है कि नहीं? उसपे कुछ

कवर चढ़ा दिया जाता है, भले पतला कवर है लेकिन ऐसा कवर चढ़ जाता है कि वो उसको खींचता ही नहीं। तो टाईम लगेगा ना?
Student: Baba, in order to avoid that Baba has said that you should not see while seeing.
Baba: That is all right. We should not see while seeing. That is all right. But as regards the *shrimat* that you have received..... what? The one who comes to the mind again and again, it means that there is attachment. What is the indication of attachment? The indication of attachment is, the one for whom we develop attachment will come to our mind again and again. He will come in front of our eyes. So, what should we do? (Someone said - We should not even see his face) Yes, we should not even see his face. OK, we will not see the face through these eyes, but if we continue to see the face and eyes through the inner eyes, then what should we do? What should we do at that time? We should see the Father's eyes, we should see the Father's face; then the effect will be overcome because there is no magnet stronger than the Father. But one kind of iron is such that it is pulled to the magnet immediately, and one kind of iron is such that it is polished (with some paint). Is it polished or not? It is covered by something. The cover may be thin, but the cover is such that it does not pull the magnet at all. So, it will take time, will it not?

हिम्मत नहीं हारना चाहिए कि हमने तो इतनी बार काँट कर दिया, इतनी बार बाबा को याद किया फिर भी याद आ जाता है। जितनी बार याद आए उतनी बार बाप को लिख करके देना चाहिए। लेकिन बाप तो कहते हैं- एक बार लिख करके दिया- माफ। दूसरी बार लिखकरके दिया- माफ। तीसरी बार माफ नहीं होगा। ज्यादा से ज्यादा तीन बार माफ होगा फिर माफ नहीं होगा। तो फिर बार-2 लिखने से फायदा क्या? (किसी ने कुछ कहा) नहीं। बाप का डायरेक्शन है कि कर्मेन्द्रियों से जो कर्म करते हैं... क्या? कर्मेन्द्रियों से जो कर्म करते हैं उसका पाप बन जाता है। अगर मन के अन्दर संकल्प आया, उससे पाप नहीं बनता। तो भले मन में बार-2 वो चेहरा और आँखे याद आती है लेकिन सच्चे दिल से बाप को अपने संकल्पों तक पोतामेल देते रहे तो आखरीन क्या होगा? आखरीन याद आना बन्द हो जावेगा। तो ये ही सुधार का तरीका है। याद के सिवाय और दूसरे तरीके से पाप और पापियों से छुटकारा मिल नहीं सकता।
You should not lose courage (thinking): I have cut (the thoughts of the person for whom I developed attachment) so many times, I remembered Baba so many times, even so he/she comes to my mind. As many times he/she comes to your mind, you should write to Baba. But the Father says, ‘if you give it in writing once, it will be pardoned. If you give it in writing for the second time, it will be pardoned. It will not be pardoned the third time. At the most it will be pardoned thrice; then it will not be pardoned’. So, what is the use of giving it in writing again and again? (Someone said something) No. The Father's direction is that the actions that you perform through the bodily organs....what? The actions that you perform through the bodily organs.....what? Whatever actions that you perform through the bodily organs lead to accumulation of sins; if you just have a thought then it does not accumulate sins. So, although the same face and eyes come to your mind again and again, if you keep giving *potamail* to the Father with a true heart about your thoughts, then what will happen ultimately? Ultimately, the thoughts will stop emerging in your thoughts. So, this is the method of correction. Except remembrance there is no other method by which you can be liberated from the sins and sinful ones.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु: खूबसूरत शक्ल विनाशी है ना .....।
बाबा: हाँ वो तो सभी जानते हैं। वो तो सभी जानते हैं कि जो भी रूप है, इस दुनिया में बाप के अलावा जो भी हम इन आँखों से देखते हैं वो सब विनाशी है। कोई नई बात नहीं।
जिज्ञासु: सिर्फ बाबा को याद करने से होगा या ये समझना कि ये सब विनाशी है?
बाबा: देहभान होगा तो विनाशी मालूम ही नहीं पड़ता है। देहभान होगा तब ही तो देहवाला याद आयेगा। अपने को आत्मा समझकरके जो पक्का बैठ गया उसको देहधारी याद क्यों आयेगा? एक तो ये भूल कैसे होती है बार-2 और भूल को कैसे सुधारना है वो बाबा ने मुरली में बताय दिया। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बार-2 भूलता है बार-2 याद करो। दूसरा कोई तरीका ये पाप और पापियों से छुटकरा पाने का नहीं है। पापी पीछे पड़ गया न कोई? तो पापी से छुटकारा कैसे मिले? हिसाब-किताब तो हमने जोड़ा या कोई दूसरे ने जोड़ा? हमने जोड़ा तो हमने जो हिसाब-किताब जोड़ा है वो हमको ही काटना पड़ेगा।
Student: Beautiful face is destructible, isn't it?
Baba: Yes, everyone knows that. Everyone knows that whatever forms exist in this world except the Father, whatever we see through these eyes is destructible. It is not a new thing.
Student: Will we forget just by remembering Baba or should we think that all this is destructible?
Baba: If there is body consciousness, then you will not find them to be destructible. Only if there is body consciousness, the one with body will come to your mind. Why will the one who considers himself to be a soul remember the body? One thing is that Baba has said in the Murli as to how this mistake occurs repeatedly and how we have to correct it. Think yourself to be a soul and remember the Father. If you forget again and again, then remember [this] again and again. There is no other way to be liberated from sins and sinful ones. Some sinful soul has started chasing you, isn't it? So, how can you save yourself from the sinful one? Did we create the karmic account or did anyone else create the karmic account? We created it; so, the karmic account that we have created should be cut only by us.

समयः 01.04.10-01.09.15
जिज्ञासुः ब्रहमा भोजन के लिए देवतायें तडपते हैं। इसका मतलब क्या है?
बाबा: देवतायें जो है वो ब्रहमा भोजन के लिए तडपते हैं। (किसीने कहा- देवता बनने के बाद ब्रहमा नहीं रहता है।) ब्रहमा भोजन तो रहता है। हाँ? कि वो भी खत्म हो जाता है? ब्रहमा ने जो भोजन खाया, चाहे हद का भोजन है और चाहे बेहद का भोजन है खाया किसके द्वारा? प्रजापिता ब्रहमा के द्वारा खाया न? तो जो भी भोजन खाया उस भोजन के लिए देवतायें, देवात्मायें तडपती है। “हे! भगवान जल्दी मिले... क्या? कल मिले सो आज ही मिल जाए।” हाँ? अभी मिल जाए। कल करे सो आज कर। आज करे सो अब। तो समझ में आ जानी चाहिए बात। आ गई ना? तुम उनको समझाओ। वो भाषा नहीं जानते हैं, तो बता दो कान में। समझ में आ गया कि नहीं? नहीं आया? अरे?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 01.04.10-01.09.15
Student: Deities long for Brahma *bhojan* (food). What is meant by this?
Baba: The deities long for Brahma *bhojan*. (Someone said - Once we become deities, Brahma does not exist) But Brahma *bhojan* does exist. Hm? Or does even that perish? The food that was consumed by Brahma, whether it is in a limited sense or in an unlimited sense, through whom was it eaten? It was eaten through Prajapita Brahma, wasn't it? So, whatever food He ate; the deities, the deity souls long for it. O God! We should get it soon. ....What? We should receive today whatever we are supposed to get tomorrow. Hm? We should get it now. 'Do today whatever you have to do tomorrow. Do now whatever you have to do today'. So, you should understand now. You have understood, haven't you? (Student said: Mataji didn't understand) Explain to her; she does not understand the language; so, put it in her ears in whispers. Did she understand or not? Didn't she? Arey?

जो भी असली देवतायें हैं जो नर से नारायण जैसे बनने वाले हैं वो देवतायें रुद्रमाला के मणके हैं या विजयमाला के मणके विशेष है? रुद्रमाला के मणके हैं और उन रुद्रमाला के मणकों को इस आखरी जन्म में जो पुरुषार्थ में सहयोगी मिले हैं उन सहयोगियों से वो संतुष्ट है या असंतुष्ट है? असंतुष्ट है मोस्टली.... कोई संतुष्ट हो तो हाथ उठा दो। आखरी जन्म में सब असंतुष्ट है और ये उनकी बुद्धि में हैं......; उनकी बुद्धि में ये हैं कि 21 जन्मों का जो पुरुषार्थी सहयोगी हमे मिलने वाला है उसके बजाए हमारा उद्धार होने वाला नहीं है और जो भी सहयोगी मिलेगा वो भगवान से सम्बन्ध पहले जोड़ने वाला होगा या उस देवता से पहले सम्बन्ध जोड़ने वाला होगा? भगवान से पहले सम्बन्ध जोड़ने वाला होगा। अगर कहीं खुदा-न-खास्ता देवता से सम्बन्ध जोड़ बैठा तो और ही गढ़्ढे में जायेगा या ऊपर उठेगा? और ही गढ़्ढे में चला जायेगा।
The true deities, who change from a man to Narayan, are they the beads of the rosary of Rudra or are they the special beads of the rosary of victory? They are beads of *Rudramala.* And the helper souls that those beads of Rudramala have received in this last birth to make spiritual effort (purusharth), are they satisfied with those helpers or are they dissatisfied with them? They are mostly dissatisfied......... If anyone is satisfied, raise your hands. In the last birth everyone is dissatisfied and it is in their intellect..... It is in their intellect that without the *purusharthi* helper that they are going to receive for 21 births, they are not going to be uplifted. And whichever other helper they get, will he first establish connection with God or with that deity first? He will establish connection with God first. If, by chance he establishes connection with the deity, then will he go deeper into the pit or will he be uplifted? He will fall deeper into the pit.

इसलिए भक्तिमार्ग में गायन है कि शिव के ऊपर जो नैवेद्‍य चढ़ाया जाता है, भोग चढ़ाया जाता है.... यहाँ भोग की ही बात हो रही है ना? हाँ? क्या बात हो रही है? भोजन, भोग की बात हो रही है ना? तो जो भी शिव के ऊपर नैवेद्‍य या भोग चढ़ाया जाता है अगर कोई खा ले तो क्या हो जायेगा? वो विषय-वासना वाला गढ़्ढे में चला जायेगा, विधर्मी बन जायेगा। इसलिए कोई भी शिव के ऊपर चढ़ाए हुए नैवेद्‍य को, भोग को भोगता नहीं है कि भोगता हैं?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

डरते हैं। अरे, ये तो विषैला हो गया। अगर हमने विष खा लिया तो क्या हो जायेगा? गढ़्ढ़े में जायेंगे या ऊपर जायेंगे? ग़ढ़्ढ़े में चले जायेंगे। इसलिए सब डरते हैं। कम से कम ज्ञानी तो डरते रहेंगे कि नहीं डरेंगे? ज्ञानी तो डरेंगे। लेकिन ज्यादातर अभी संख्या ज्ञानियों की है कि अज्ञानियों की? अभी मोस्ली संख्या अज्ञानियों की बहुत है। क्या कहा? (किसी भाई की ओर देखते हुए कहा:) सुन रहे हो कि नहीं? अरे, हाँ तो करो।

This is why it is famous in the path of *bhakti* that the offerings (*naivaidya*) made to Shiv, the *bhog* (offering) offered to Shiv....... Here you are talking about *bhog*, aren't you? Hm? What are you talking about? You are talking about food, *bhog*, aren't you? So, whatever *naivaidya* or *bhog* is offered to Shiv; what will happen if someone eats it? He will fall into the pit of lust and vices; he will become *vidharmi*[5]. This is why nobody eats the *naivaidya, bhog* offered to Shiv; or does anyone eat it? They fear. Arey, this has become poisonous. If we eat the poison, then what will happen? Will we fall into the pit or will we rise? We will go into the pit. This is why everyone fears. At least the knowledgeable ones will fear or not? The knowledgeable ones will fear. But now is the number of knowledgeable ones more or is the number of ignorant ones more? Now mostly, the number of ignorant ones is more. What was said? (Baba looked at a brother and asked) Are you listening or not? Arey, at least say 'yes'.

तो जो भी अज्ञानी है उनकी बुद्धि में जल्दी ये बात बैठती नहीं। तो उनको ये आस बनी रहती है कि जो ब्रहमा भोग है, ब्रहमा, प्रजापिता ब्रहमा ने जिन-2 का भोग लगाया है, अच्छे-2 नैवेद्यों का उनका भोग हमको जल्दी मिल जाए तो हम भी संग के रंग से.... क्या हो जाए? हमारा भी उद्धार हो जाए। लेकिन ऐसा कुछ होना नहीं है। क्यों नहीं होना है? वो भी एक गुह्य राज है।

So, this does not fit in the intellect of all those who are ignorant. They continue to nurture the hope that the Brahma *bhog*, all those whose *bhog* has been accepted by Brahma, Prajapita Brahma, if we too get to taste those nice offerings soon, then what will happen to us if we are colored by their company? We will be uplifted as well. But no such thing is going to happen. Why is not going to happen? That is also a deep secret.

…………………………………………………………………..……………………………

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

[5] The one following beliefs and practices opposite to that set by the Father.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info